वैश्विक सन्दर्भमें शिक्षक शिक्षा : शैक्षिक संस्थाओंका दायित्व

डॉ. देवेन्द्रा आमेटा
वरिष्ठ प्रध्यापिका,
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी टी ई) डबोक,
राजस्थान (भारत)

हरीशचन्द्र चौबीसा
सहायक आचार्य,
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी टी ई) डबोक,
राजस्थान (भारत)

१. प्रास्ताविक

शिक्षा हमारे जीवन का क्षक आधार स्तम्भ है जिसके माध्यम से मानव अपने जीवन में सर्वांगीण विकास की नींव मजबूत करता हैं। प्रचीन समय की शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही भारत विश्व के मानचित्र पटल पर सुशोभित हुआ है। हमारी सभ्यता व संस्कृति इसका साक्षात प्रमाण है। लेकिन समय के साथ सब कुछ बदलता गया, तथा स्वतंत्रता के पश्चात आदर्श समाज की कल्पना हेतु विभिन्न शिक्षा आयोगों का पुर्नगठन हुआ। इन आयोगों का मुख उदेश्य अध्यापक शिक्षा के द्वारा भारत को नवीन आयाम प्रदान करना था ताकि अमृत रूपी शिक्षा के वातावरण में रहकर सभ्य नागरिक का निर्माण हो सके।

लेकिन बदलते परिवेश एवं वर्तमान समय में भारत (जी एल पी) के दौर में तरह के दबाव, परिवर्तन व चुनौतियों के दौर से निकल रहा हैं, और शिक्षा के क्षेत्र में व्यवसायिक क्षेत्रों का आना शिक्षा को एक जटिल प्रकिया में बदल रहा है। आज अध्यापक शिक्षा की बात करे तो आज अध्यापक स्वयं अपना अस्तित्व बचाने हेतु प्रयासरत है।

२. वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा के सामने बहुत सारी चुनौतियां

२.१ अध्यापक शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता एवं वर्तमान स्थिति

शिक्षक का कार्य सदैव बहुत चुनौतिपूर्ण होता है, आज के परिप्रेक्ष्य में तो यह और भी चुनौतिपूर्ण बन गया है। शिक्षक का जो प्रभाव बालकों पर पड़ता है, उससे उनका उत्तरदायित्व काफी बढ जाता हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो अध्यापक शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न लग गया है, क्या हजारां शिक्षक जो अध्यापनरत हैं उनको अध्यापन कराने के लिए क्या पूर्ण प्रशिक्षित प्राध्यापक है? यदि नहीं तो इनके द्वारा पढ़ाये गये छात्राध्यापकों का विष्य क्या होगा? आधा-अधूरा ज्ञान क्या माध्यमिक स्तर तक के छात्रों का विष्य बना पायेंगे। अतः गुणवत्ता युक्त व प्रभावशाली शिक्षक वनाने के लिए सर्वप्रथम शिक्षाविदों द्वारा इन्हें प्रशिक्षित किया जाना नितान्त आवश्यक है, जिससे अध्यापक शिक्षक शिक्षा प्रभावशाली बने।

२.२ शिक्षा का तेजी से होता व्यवसायीकरण

जिस प्रकार बड़ी-बड़ी मल्टीनेशनल कम्पनियाँ विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर व्यवसाय कर रही है, तथा मुनाफा कमा रही है, इसी सोच का वे शिक्षा जगत में लागू कर शिक्षा का पूर्ण रूप से व्यवसायीकरण करन में प्रयत्नशील हैं। प्रचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर आज तक शिक्षक जब छात्रों को अध्यापन करता आया है, तब एकमात्र उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना तथा इतिहास के पृष्ठों पर उसे सुशोभित करना, लेकिन आज शिक्षा को एक व्यवसाय का रूप देकर मुनाफा कमाना ही उद्देश्य रहा गया ह। इन पाँच वर्षों में जो अनगिनत शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय खुले है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, नियम, कायदे, कनून से उपर उठकर संस्थाएँ एक या दो कमरों में पुरा महाविद्यालय चला कर छात्रों से अनगिनत पैसे कमा रही है। यह आप सबको सर्वविदित है।

क्या यह उचित है? महज खानापूर्ति से पूर्ण की गई " शिक्षण प्रशिक्षण प्रकिया" क्या आने वाले बच्चों का विष्य तैयार कर सकती है? अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को व्यवसाय न समझ करके राष्ट्र को समर्पित सेवा का बिगुल बजाना होगा।

२.३ प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा की दयनीय स्थिति

छात्र राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है। प्रारम्भिक शिक्षा ही बालक के जीवन की दिशा को तय करती है, राय में सुदूर ग्रामीणांचलों में शिक्षा का संचार करने के उद्देश्य से तथा औपचारिक पाठशालाओं व अनौपचारिक केन्द्रों वनिजी संस्थाओं के कियाकलापों में तादात्म्य स्थापित करने एवं प्रभावशाली शैक्षिक गतिविधियों हेतु "जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम" का निर्माण किया गया, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो शिक्षक-शिक्षा शिक्षार्ती की दयनीय स्थिति है। आज प्राथमिक शालाओं में एक अध्यापक पाँच-पाँच कक्षाओं को संभाल रहा है, इस नैतिक जिम्मेदारी के साथ-साथ वह सरकारी कार्ये जैसे पोषाहार बनाने में, पल्स पोलियों में, चुनावों में, पशुगणना, जनगणना, मकान गणना, मतदाता सूची बनाने में, साक्षरता, सर्वशिक्षा के कार्यक्रम, वन निर्माण कार्य तथा विभिन्न सजिस्टरों के व्यवस्थीकरण ही उसका समय पुरा हो जाता है। इन परिस्थितिओं में क्या शिक्षक बालक के सर्वांगीण विकास की नींव मजबूत कर पायेगा? यह एक विचारणीय प्रश्न हैं। अतः शिक्षक को अन्य कार्यो से मुक्त कर प्राथमिक शिक्षा प्रभावशाली बनाने की योजना बनानी पडेगी, तभी माध्यमिक स्तर तक शिक्षक-शिक्षा प्रभावी बनेगी।

२.४ अध्यापक शिक्षा में नवाचार व शोध

राष्ट्रीय शिक्षा नीतिमें उदघोषित कल्पनाओं में शैक्षिक विकास में नवाचारों पर विशेष बल दिया। शैक्षिक नवाचार विद्यालयों में प्रगति के लिए अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य भी हैं। नवाचार के बिना शिक्षण अधूरा हैं।सतत मूल्यांकन, निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण, प्रदर्शन पाठों का प्रभावी आयोजन, कमजोर एवं प्रभावशाली विद्यार्थियों को व्यक्तिगत शिक्षण। अनुदेशन, प्री-बोर्ड परीक्षा आयोजन, अध्यापक-अ परिषद का गठन एवं प्रभावी कियान्विति, निर्देशन कार्नर द्वारा विद्यार्थीयों को जानकारी हासिम कराना, नवीन तकनीकों के माध्यम से पाठ प्रस्तुतीकरण का कौशल विकसित करना, तथा अध्यापक शिक्षा में नीत-नवीन जो परिवर्तन हो रहै है, वर्तमान स्थिति में भारत में किये जाने वाले अनुसंधान में जो गिरावट आयी है। व ब्लज-ब्लेज डुप्लीकेट चुराया कार्य जैसे कई केसेस राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर होने के बाद हाल ही में यू जी सी के द्वारा प्रवेश परीक्षा द्वारा पी एच डी में चयन प्रकिया अपनाई गई है। अतः यह बात स्वयं मे, इस बात की द्योतक है कि इस क्षेत्र में शोध आवश्यकताओं के अधार एवं गुणवत्ता को पूरा नहीं करती हैं। अतः नवीन विषयों के ऊपर शोध कर अध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत करना, जिससे अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता आये तथा छात्रों की अधिगम प्रकिया प्रभावी व रूचिपूर्ण बने। तथा माध्यमिक शिक्षा तंत्र गुणवत्ता प्रतीक बने।

२.५ शिक्षण-प्रशिक्षण गुणवत्ता हेतु सतत शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को एक सुनागरिक बनाने के लिए तैयार करना भी है। इस ष्टि से ज्ञान व अवबोध के साथ-साथ कौशलयुक्त किया सम्पादन भी शिक्षा का ज्ञान एक अि य अंग हो जाता हैं। इसके लिए आवश्यक है कि सतत शिक्षा के माध्यम से छात्रों को सर्वोत्कृष्ट बनाना। शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम महज खानापूर्ति कार्यक्रम बनकार रह गया हैं। अतः विषयाध्यापक सतत मूल्यांकन को ष्टिगत रखते हुए अध्यापन कार्य के साथ-साथ छात्राध्यापकोल का समय-समय पर मूल्यांकन करे। इकाई जाँच, मासिक जाँच, सामायिक जाँच एवं वार्षिक परीक्षाओं के माध्यम से शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति की जाँच हो सकेगी। शिक्षक स्वयं का मूल्यांकन करेगा एवं अपनी अध्यापन विधियों में उचित परिवर्तन एवं परिवर्धन भी कर सकेगा। इससे छात्राध्यापकों के स्तर का पता लगेगा। साथ ही उनके अनुसार निदानात्मक शिक्षण प्रकिया अपनाने में भी सहायता मिलेगी।

२.६ अध्यापक शिक्षा का पाठयक्रम एवं मूल्यांकन प्रणाली

पाठयक्रम छात्रों के लिए एक ऐसी आधारशिला हैं, जिसके माध्यम से छात्र वर्ष र अध्ययन अध्यापन की कड़ी से जुडकर अपना मार्ग प्रशस्त करता है, लेकिन वर्तमान पाठयक्रम बहुत संकुचित है व अधिक सैद्धान्तिक एवं पुस्तकीय है। इसमें व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए व्यवहारिक एवं अन्य कियाओं का पर्याप्त समावेश नहीं किया गया हैं । अतः पाठयक्रम निमार्ण के समय सामाजिक मांग के अनुसार पाठयक्रम का विकास, समसामयिकता व अध्ययनता के उपागमों का समावेश, पाठयक्रम सम्बन्धी

अपेक्षित पृष्ठपोषणीय कार्यक्रम सुनिचित करना, पाठयक्रम को स्थानीय उपभोकता व स्थानीय मूल्यों से अनुकूलित रखना । आदि बातों का ध्यान रखना चाहिए । साथ ही प्रभावी आन्तरिक मूल्यांकन की विवसनीयता व वैधता को संस्थापित करना, मूल्यांकन कार्यक्रम को विद्यार्थीयों के कार्य निष्पादन व सम्पूर्ति,व्यवहार तथा आचरण के वस्तुनिष्ठ पहलुओं पर केन्द्रित करना तथा सतत मूल्यांकन के तंत्र को स्थापित करना जिससे अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे ।

२.७ शिक्षा जगत में वैश्विक सम्बन्धों को बढ़ावा

वैश्विकरण के इस युग में आज दुनिया बहुत आगे है, लेकिन हम अभी तक भारत में चल रहे शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में अभी पूर्ण रूप से जानकार नहीं है, वही दूसरी ओर विदेशी विश्वविद्यालय भारत में शिक्षा की आवश्यकता को समझकर प्रवेश कर रही है, अतःप्रभावकारी शिक्षण के लिए विश्व के मानमित्र पटल पर शिक्षा में हो रहे नीति नये परिवर्तनों का ज्ञान आवश्यक हैं। विदेशों में शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रमो को समझने के लिए विभिन्न आंतरराष्ट्रीय संगठनो, शिक्षक परिषदों का गठन किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय ज आंतरराष्ट्रीय स्तर पर विचारों का प्रदान होनी चाहिए। जिससे समन्वय बना रहेगा। नहीं तो आने वाले वर्षो में हमारे देश का छात्र अन्य विदेशी विश्वविद्यालयों के सामने अपनी योग्यता सिद्ध कर पायेगा यह कहान मुश्किल होगा।

२.८ शिक्षण अभ्यास पाठों का संचलन एवं प्रशिक्षण अवधि

आज शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या इतनी अधिक हो गई हैं, कि इसकी गुणवत्ता निश्चित करना एक चुनौती है। ऐसी स्थिति में प्रशिक्षण देने वाले महाविद्यालयों में संचालित शिक्षण अभ्यास पाठों की स्थिति भी विचारणीय हैं। इतनें छात्राध्यापकों की पाठ योजना जाँच करनी तथा वद्यालयों में छात्रों के समक्ष प्रस्तुतीकरण मात्र एक औपचारिकता बन जाती है। छात्राध्यापक प्रथम चक्र व द्वितीय चक्र के पाठों का अदान प्रदानक र पाठों का अध्यापन करा लेते है लेकिन गुणवता नहीं आती हैं। यह प्रक्रिया कितनी यांत्रिक है, जिसमें सभी प्रविष्ठ प्रशिक्षु श्रेष्ठतम शिक्षक बनकार निकलते है? पूरी प्रक्रिया में इतने सोचने की स्वतंत्रता व व्यवस्था नहीं है कि क्या प्रत्येक प्रशिक्षु में निर्धारित कौशल विकसित हो चुके है यदि नतो अगे क्या उपचारात्मक कदम उठाये जा सकते है? साथ ही प्रवेश प्रकिया व प्रशिक्षण अवधि पर भी चिन्तन करना होगा, वर्ष र प्रवेश प्रकिया की केन्द्रिय व्यवस्था होनी चाहिए।

अध्यापक शिक्षा के सामने जो समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी है, आवश्यकता इस बात की है, कि समस्त शिक्षाविद एक मंच पर इसके उत्कर्ष हेतु सतत प्रयत्नशील रहे।

अतः माध्यमिक शिक्षक शिक्षा को गुणवत्ता युक्त बनाना है, तो एक बार पुनः महाविद्यालयों में आधारूत सुविधाएं, प्रबन्धन तथा समुदाय का सहयोग, विद्यालय तथा कक्षा-कक्षा का वातावरण पाठयचर्या तथा शिण अधिगम सामग्री, शिक्षक एवं शिक्षकों की तैयारी, क्लास-म प्रेक्टिस तथा मूल्यांकन प्रणाली, शिक्षण अधिगम समय, प्रशिक्षण प्रकिया आदि की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए रणनीति बनानी होगी, तभी हम आदर्श "**शिक्षक-शिक्षा**" की कल्पना कर सकते है।

सन्दर्भग्रन्थ

१. नगदा, वरलाल द्द. (२००१). शिक्षा जगत में नवीन प्रयोग, अंकुर प्रकाशन ।
२. शिक्षा की चुनौती : नीति संबंधी परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।
३. राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा २००५।